

## कलाकोश प्रभाग के २३वीं स्थापना दिवस समारोह का संक्षिप्त विवरण

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, पूर्वक्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी के द्वारा विगत १५ जुलाई, २०११ को परिस्पन्द परिसर में कलाकोश प्रभाग के २३वीं स्थापना दिवस महासमारोह के साथ पालित हुआ। उक्त अवसर में एक विशेष व्याख्यान आयोजित था, जहाँ लखनऊ विश्वविद्यालय के अवकाशप्राप्त प्रख्यात दार्शनिक अध्यापक प्रो० नवजीवन रस्तोगी को भाषण देने के लिये आमन्त्रित किया गया था। उन्होंने "अभिनवगुप्तपादाचार्य की कृतियों में आगम का स्वरूप" पर गम्भीर एवं विशद व्याख्यान प्रस्तुत किया। सभा के अध्यक्ष पद पर संस्था के परामर्शदाता प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी विराजमान थे। सभा में उपस्थित अन्य विद्वज्जन के विवरण निम्नरूप हैं :-

१. प्रो० कमलाकर मिश्र
२. डा० कमलेश झा
३. डा० शीतला पसाद उपाध्याय
४. डा० शीतला प्रसाद पाण्डेय
५. डा० राघवेन्द्रजी दूबे
६. डा० भक्तिपुत्र रोहितम्
७. डा० सुकुमार चट्टोपाध्याय
८. डा० ऊर्मिला शर्मा
९. डा० गणेशदत्त त्रिपाठी
१०. डा० रजनीकान्त त्रिपाठी
११. डा० त्रिलोचन प्रधान
१२. डा० रमा दूबे
१३. श्री चतुर्भुज दास
१४. श्री संजय सिंह
१५. श्री गौतम कुमार चटर्जी
१६. श्री पी० के० चटर्जी
१७. श्री अमित जैन एवं
१८. डा० प्रणति घोषाल ।

अनुष्ठान का शुभारम्भ डा० भक्तिपुत्र रोहितम् (सं०वि०ध०वि०सं०, का०हि०वि०वि०) के उच्चारित आगमिक मंगलाचरण से हुआ। इसके पश्चात् संस्था के परामर्शदाता प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी ने अपने संक्षिप्त भाषण में विद्वान् वक्ता को सभा के विद्वन्मण्डलो के सामने परिचित कराया तथा विषय प्रवर्तन किया।

इसके पश्चात् "अभिनवगुप्तपादाचार्य की कृतियों में आगम का स्वरूप" विषय पर प्रो० रस्तोगी का भाषण आरम्भ हुआ-

स तन्निबन्धं विदधे महार्थं

युक्त्यागमोदीरिततन्त्रतत्त्वम् ।

आलोकमासाद्य यदीयमेष

लोकः सुखं संचरिता क्रियासु ॥ (तन्त्रा० ३७.८२)

तन्त्रालोक के उपर्युक्त श्लोक के आलोक में प्रो० रस्तोगी ने आगम के स्वरूप की व्याख्या की। अभिनवगुप्त के अनुसार आगम तत्त्व की संज्ञा प्रदान करते हुए प्रो० रस्तोगी ने मन्तव्य व्यक्त किया कि आगम सारे विद्यास्थान का फल है। आगमतत्त्व हमारे सामने मूलतः तीन रूपों में आता है- एकवाक्यता के रूप में, प्रमाण रूप में और तन्त्र रूप में। प्रो० रस्तोगी ने अपने भाषण क्रम में कहा कि आचार्य अभिनवगुप्तपाद के (१) तन्त्रालोक, (२) ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी, (३) ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविवृतिविमर्शिनी एवं (४) मालिनीविजयवार्त्तिक- यह चार ग्रन्थों में आगम को प्रमाण के रूप में विचार किया है।

इसके बाद प्रो० रस्तोगी ने आगम शब्द की व्युत्पत्ति तथा निर्वचन पर चर्चा की। उनके विचार से आगम की यह व्युत्पत्ति अवगतिमूलक और आयातिमूलक है। आसमन्तात् अर्थ गमयति इति आगमः, अथवा आ सम्यक् अर्थ गमयति इति आगमः। 'सम्यक्त्व' को उन्होंने टोकाकार के अनुसार दृढ़विमर्शनरूप बतलाया। प्रसङ्गतः प्रो० रस्तोगी ने आयातिमूलक व्युत्पत्ति का भी उल्लेख किया। ईश्वरात् आगतः इति आगमः अर्थात् इसी दृष्टि से विचार किया जाय तो आगम को सम्पूर्णतः ईश्वरी वाक् मानना होगा। प्रसंगतः यह कहना अनर्चित नहीं कि भारतीय दर्शन के सन्दर्भ में आगम को अपौरुषेय या अकर्तृक कहा गया, अभिनवगुप्तपाद की विशेषता यह थी कि उनकी रचना में अकर्तृकत्व के साथ ईश्वर कर्तृकत्व को सम्मिलित किया गया। उनकी रचना में आगमों के स्वरूप अपौरुषेय बोला गया एवं आचार्यपाद उसकी ईश्वर कर्तृकत्व के भी निराकरण नहीं किये।

आचार्यपाद के मतानुसार तीन प्रकार से आगम पर विचार विमर्श करना सम्भव है - (१) प्रसिद्धि रूप से, (२) प्रतिभान रूप से और (३) आतोपदेश रूप से। सम्भवतः ये आगम के त्रिविध अर्थ हैं; क्योंकि लौकिक से लेकर त्रिक पर्यन्त आगम मुख्यतः एक ही है। 'एक एव आगमश्चायम्'। मुख्यतः चित्स्वरूप ईश्वर विषयक विमर्श ही आगम है। यद्यपि यह अभिमत सर्ववादिसम्मत नहीं है। तन्त्रालोक में और ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविवृतिविमर्शिनी में आगम को प्रसिद्धिरूप से विचार किया गया। प्रसिद्धिरागमो लोके . . . . इस श्लोक की व्याख्या करते समय आचार्यपाद ने इसको विमर्श के साथ जोड़ दिया। अभिनवगुप्तपाद के कहने के अनुसार आगम के यह स्वरूप विचार उनका अपना नहीं है, यह उनको परम्परा में ही प्राप्त हुआ था।

प्रसिद्धि की विशद चर्चा करते हुए प्रो० रस्तोगी द्विविध प्रसिद्धि के बारे में श्रोताओं को बतलाये। (१) निबद्ध प्रतीति एवं अनिबद्ध प्रतीतिरूप अथवा इसको लोकप्रसिद्धि और महाजनपसिद्धि के रूप में भी कहा जा सकता है। प्रसिद्धिरूप आगम की चर्चा करते हुए प्रो० रस्तोगी ने इससे सम्बद्ध कुछ और पारिभाषिक शब्द के ऊपर (जैसा कि नियति, अधिकारी, विमर्श आदि) भी अभिनवगुप्तपाद के अनुसार अपना विचार व्यक्त किया।

परवर्ती काल में आचार्यपाद आगम को प्रतिभान के रूप में भी व्याख्यात किया। प्रतिभानलक्षणा इयं शाब्दभावनाख्य प्रतीतिः आगम एव - यह प्रतिभा को आचार्य वाङ्मयी वृत्ति एवं मानसी वृत्ति के रूप में भाषित किया। शिवदृष्टि ग्रन्थ की व्याख्या करते समय आचार्यपाद ने प्रतिभारूप आगम के ऊपर अपना विचार रखा है।

तन्त्रालोक के अन्तिम अध्याय (३७ वां अध्याय) में आगम की आतोपदेश के रूप में चर्चा की गयी है। प्रो० रस्तोगी के विचार में मूलतः पातञ्जलदर्शन के सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन एवं अवगति के लिये ही आतोपदेशरूप से आगम का विचार किया गया। प्रसंगतः प्रो० रस्तोगी बतलाये कि अभिनवगुप्त के

अनुसार आस कौन हो सकता है। आस नियताकार, लोक, शास्त्र अथवा अनियताकार पुरुष भी हो सकता है।

आगम की चर्चा करते समय आचार्यपाद के सामने बौद्ध, मीमांसक आदि विभिन्न सम्प्रदाय प्रतिपक्ष के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने बहुत सारे सवाल आचार्य के सामने रखे। जैसे कि मीमांसा सम्प्रदाय ने परम्परा के प्रामाण्य पूर्णतया खण्डन कर दिया, लेकिन आचार्यपाद परम्परा का सम्पूर्णतः निराकरण नहीं किया। बौद्ध सम्प्रदाय केवल प्रत्यक्ष और अनुमान यह दोनों को ही प्रमाण रूप से स्वीकार किया, उनके मतानुसार आगम परार्थानुमान के अन्तर्गत है, इसके पृथक् प्रामाण्य मानने की प्रयोजन नहीं है।

आचार्य अभिनवगुप्तपाद अपने कृतियों में आगम की व्याख्या करते हुये ये सारे विरोध की भी मीमांसा की है।

प्रो० रस्तोगी के व्याख्यान के ऊपर प्रो० कमलाकर मिश्र, डा० कमलेश झा आदि विशद चर्चा किये। प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी के अध्यक्षीय भाषण एवं धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। संचालन डा० प्रणति घोषाल ने किया।

– प्रणति घोषाल